क्या हिरण पहाड़ी क्षेत्रों में रहना पसंद करते हैं

किताबों में तुमने कई बार हिरणों के सुंदर चित्र देखे होंगे। और यदि कभी तुम्हें चिडियाघर जाने का मौका मिला हो तो वहां उनकी उछलकूद देखकर भी बहुत खुशी हुई होगी। पर तुमने एक या दो तरह के हिरण ही मुश्किल से देखे होंगे। यह बात तुम्हें हैरान कर सकती है कि दुनियाभर में हिरणों की कई प्रजातियां होती हैं। आओ, आज हम तुम्हें तरह-तरह के हिरणों से रूबरू कराते हैं।

कहां अधिक पाए जाते हैं हिरण

हिरण प्राय: हिमालय पर्वत से २५०० से ४००० मीटर तक समुद्र तल से ऊंचे स्थानों पर रहते हैं। ये तिब्बत नेपाल, साइबेरिया, कोरिया आदि में पहाड़ी भागों में रहते हैं। हिरणों की टांगें फुर्ती से ऊंची-ऊंची पहाड़ी पर टिक जाती हैं। इनके पैर बर्फ में नहीं फंसते हैं और न ही फिसलते हैं। ये १५ से २० मीटर तक छलांग लगाते हैं। इनके सुनने की क्षमता अधिक होती है।

कस्तूरी होती है खास

एक रोचक बात यह है कि नर हिरण के पेट की खाल पर एक विशेष ग्रंथि होती है, जिससे कस्तूरी निकलती है। इसी कारण इसका नाम कस्तूरी मृग पड़ा है। एक मृग से एक औंस कस्तूरी निकलती है। इसी कस्तूरी की वजह से शिकारी इन्हें मार देते हैं।

अफ्रीका में पाया जाता है बोंगो हिरण

चिंकारा मृग छींक जैसी आवाज निकालता है, जिससे इसका नाम चिंकारा पड़ा है। ये बीहड़ जंगलों में मिलते हैं। थोड़ी-सी आहट पाते ही इनके कान खड़े हो जाते हैं। ये बार-बार सिर उठाकर देखते हैं। चीतल मृग केवल भारत और श्रीलंका में पाए जाते हैं। ये हरे भरे स्थानों पर रहना पसंद करते हैं। इनका रंग भूरा और ऊपर सफेद धब्बे बने होते हैं। इन्हें १०० से १५० की संख्या में देखा जा सकता है। ये फल और पत्तियां बड़े चाव से खाते हैं।

चौसिंगा केवल भारत में ही पाये जाते हैं। ये हिमालय में अधिक पाये जाते हैं। ये जोड़े सींग वाले मृग होते हैं, इसलिए चौसिंगा कहा जाता है। इनकी छलांग सबसे लंबी होती है।

बारह सिंगा हिरण सबसे अधिक देखने में आते हैं। सिक्किम का बारहसिंगा कश्मीरी के बारहसिंगा से कुछ मिलता-जुलता होता है। बोंगो हिरण मुख्यत: अफ्रीका में पाये जाते हैं। इनके शरीर में सादे रंग की कई धारियां होती हैं। धीरे-धीरे अब ये अफ्रीका के जंगलों से लुप्त होते जा रहे हैं। इनके नर और मादा दोनों के सींग होते हैं। सोते समय ये सींगों के सहारे पेड़ों पर लटक जाते हैं। काले हिरण सिर्फ भारत में पाये जाते हैं।

तांबे की रोगमुक्त करने की क्षमता को वैज्ञानिकों ने माना

भारतीय धर्म ग्रंथों में दिए गए तांबे के स्वास्थ्यवर्धक उपायों की क्षमता को अब वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार कर लिया है। बर्मिंघम में एक अस्पताल द्वारा यह बात सिद्ध हुई है कि आयुर्वेदिक का यह कहना सही है कि तांबे के बर्तन में रातभर रखे पानी को खाली पेट पीने से कई बीमारियां ठीक हो जाती हैं। शोधकर्ताओं ने एक पारंपरिक शौचालय की शीट, नल के हैंडल एवं दरवाजे के पुस-प्लेट को हटाकर उनकी जगह तांबे से बने समान लगाये। उन्होंने एक अन्य पारंपरिक शौचालय की उपरोक्त सतह पर मौजूद जीवाणुओं के धनत्व की तुलना तांबे से बनी वस्तुओं की सतह पर मौजूद जीवाणुओं के धनत्व से की। इससे यह पता चला कि तांबे की सतह पर जीवाणुओं की संख्या अन्य सतह के मुकाबले १० से १०० प्रतिशत तक कम थी। कॉपर बायोसाइड के उपयोग से जुड़े शोध से भी पता लगा है कि तांबा संक्रमण को दूर करता है।

कद्दू भी बढ़ा सकता है पुरूषों में उत्तेजना

कद्दू भी पुरूषों मे उत्तेजना जगाने का काम करता है। एक नए अध्ययन में यह बात सामने आई है कि कद्दू की खुशबू किसी भी परफ्यूम से ज्यादा तेजी से काम करती है।

अब वैज्ञानिक यह जानने के प्रयास में जुटे है कि कद्दू में ऐसी क्या बात है जो पुरूषों को दीवाना बना सकता है। अब तक के अध्ययन के मुताबिक कद्दू की खुशबू से रक्त तेजी से दौड़ता है। अभी तक १८ से ३४ आयू वर्ग के ३१ लोगों पर अध्ययन हुआ है, इसमें इन लोगों को विभिन्न प्रकार की खुश्बू मास्क के जरिए सुंघाई गई। इसमें पाया गया कि कद्दू की खुश्बू सबसे ज्यादा उत्तेजना पैदा करने वाली थी।

इसे जब चमेली के साथ मिलाया गया तो यह खुशबू और कारगार बन जाती है। अध्ययन टीम के मुताबिक खुश्बू का सीधा नाता मस्तिष्क से जुड़ा हुआ है।

कैसे बनते हैं काले बादल

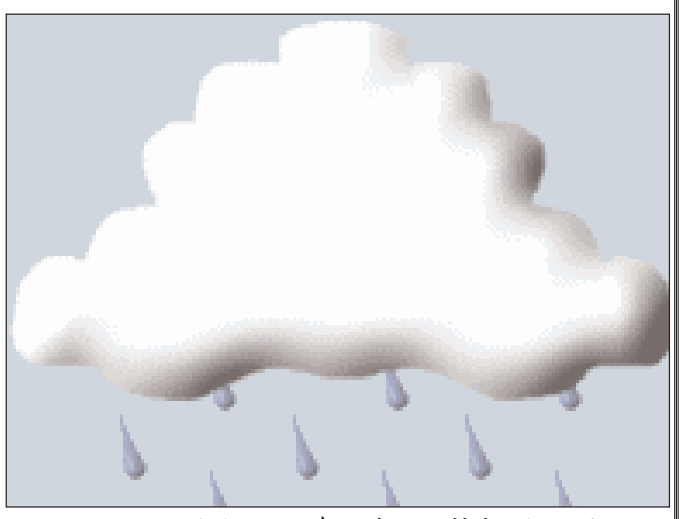

जब सूरज का प्रकाश किसी चीज पर पड़ता है तो कुछ प्रकाश तो परावर्तित हो जाता है और कुछ उस वस्तु द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है। अगर कोई चीज ऐसी हो जो प्रकाश को पूरी तरह अवशोषित कर ले तो वह काली दिखाई देने लगती है, जबकि अनेक ठोस और चमकीली चीजें प्रकाश को परावर्तित (रिफ्लेक्ट) कर देती हैं।

विज्ञान के अनुसार काला रंग वास्तव में कोई रंग नहीं है। बल्कि जो चीज सूर्य के प्रकाश को पूर्ण अवशोषित (ऑब्जर्व) कर ले वह काली दिखती है। बरसने वाले बादलों में पानी की असंख्य छोटी बूंदें होती हैं। ये बादल काफी घने होते हैं। ये बादल सूर्य के प्रकाश को पूर्णत? अवशोषित कर लेते हैं, इसलिए बादल हमें काले दिखाई देते हैं।

काले बादलों के कारण दिन में ही अंधेरा सा छा जाता है, क्योंकि सूर्य का प्रकाश इन बादलों द्वारा अवशोषित कर लेने से पृथ्वी तक नहीं आ पाता। प्राय:पट्टियों या टुकड़ों के रूप में चमकीले बादल हमें आसमान में दिखाई देते हैं। ये बर्फ के टुकड़े होते हैं।

बर्फ के कण प्रकाश के लिए पारदर्शक होते हैं, इसलिए शीशे की तरह प्रकाश इनमें से आरपार हो जाता है और इस तरह ये बादल हमें चमकीले दिखते हैं।

एक बात और, ये बर्फ वाले बादल धरती से बहुत ऊंचाई पर होते हैं जबकि बरसने वाले बादल धरती के बड़े नजदीक होते हैं। पहाड़ों में बादलों को नजदीक से देखा जा सकता है।

पहाड़ों में बरसने वाले बादल खाइयों में उड़ते नजर आते हैं अर्थात हम पहाड़ पर होंगे तो बादल हमें अपने से नीचे भी नजर आएंगे, जिन्हें हम नजदीक आने पर छू भी सकते हैं।

दुरूह कार्य है कछुए को उबासी लेना सिखाना

कछुए को उबासी लेना सिखाना बेहद जटिल काम है। एक ब्रिटिश प्रोफेसर ने लगभग छह माह से अधिक समय तक एक कछुए को प्रशिक्षण देने उक्त टिप्पणी की।

लिंकन यूनीवर्सिटी की प्रोफेसर अन्ना विल्किंसन ने रेंगने वाले प्राणियों के बर्ताव को जानने के लिए रेड-फूटेड कछुए पर यह अध्ययन किया। इसके बाद उन्होंने अपनी टीम के साथ दूसरी प्रजाति के कछुओं पर भी यही प्रयोग किया। वह यह जानना चाहती थी कि क्या दूसरी प्रजाति के कछुए उबासी लेना सीख पाते हैं अथवा नहीं, लेकिन लगभग छह माह से अधिक समय की मशक्कत के बाद इसबार उन्हें मायूसी हाथ लगी। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि इस क्षेत्र में अभी और कार्य करने की जरूरत है। अन्ना को उनकी इस मैराथन कवायद के लिए आईजी नोबल पुरस्कार से नवाजा गया है।

दुर्लभ हीरा खोजा गया

हाउस्टन विश्वविद्यालय के भूगर्भ विज्ञान एवं वास्तुशिल्प के प्रोफेसर केबिन बर्क और उनके साथियों ने खोज निकाला कि 'किम्बरलाइट' जो एक बहुत ही दुर्लभ ज्वालामुखी चट्टाने है मे भी हीरा पाया जाता है जिन्हें "मेन्टल प्लूम्स" कहते है। उन्होंने बताया यह मेन्टल २००० मील की गहराई में स्थित है जिसकी जानकारी लगभग ४० साल पहले मिली। बर्क ने कहा हमारा यह प्रयास एक दम नया है क्योंकि इसमें पृथ्वी के गहरे अंतर्भाग में होने वाली भूकमेय हलचल का अध्ययन शामिल है जिससे यह पता चलता है कि पृथ्वी की सतह पर टेक्टोनिक प्लेट्स किस तरह पहुंची। बर्क और उनके ग्रुप द्वारा किए गए शोध से इस बात की पुष्टि होती है कि पृथ्वी के अंतर्भाग का ढांच कैसा ही है जैसा ५० करोड़ साल पहले रहा होगा। बर्क ने बताया कि हीरे की खोज में दिलचस्पी रखने वाले भूगर्भ विज्ञानियों को ५० साल पहले ही यह मालूम हो गया था कि हीरा युक्त 'किम्बरलाइट' ज्वालामुखी चट्टाने पृथ्वी के द्वीपों के उस क्षेत्र में स्थित है पुरातन ज्वालामुखों में केंद्रित है। इस जानकारी ने विश्व द्वीपों के १० प्रतिशत क्षेत्र में हीरे युक्त चट्टानों की खोज को केंद्रित कर दिया है। उन्होंने बताया इस नई खोज से यह पता लग सका कि कुछ विशेष परिस्थितियों में किम्बरलाइट ज्वालामुखी से फट कर बनी होगी।

महिलाओं की याददाश्त ज्यादा तेज

महिलाओं की याददाश्त पुरुषों की बनिस्बत काफी तेज होती है यह बात एक अध्ययन में सामने आई है। वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि किसी भी बात को याद रखने के मामले में महिलाएँ पुरुषों से आगे होती हैं। शोधकर्ताओं ने पाया कि पुरुषों की स्मरण क्षमता बढ़ती उम्र के साथ कम होती है वहीं महिलाओं में यह बढ़ती उम्र के साथ और बढ़ती है।

वैज्ञानिकों ने पुरुषों और महिलाओं की स्मरण क्षमता की तुलना करने के लिए 50 वर्ष से अधिक उम्र के 10000 लोगों पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में इन लोगों की स्मरण क्षमता का परीक्षण भी किया गया। हालांकि यह साफ नहीं हो पाया कि महिलाओं की अधिक स्मरण क्षमता का राज क्या है लेकिन वैज्ञानिक इसका कारण हार्मोन ओस्ट्रोजन को मान रहे हैं।

इस अध्ययन में शामिल 10000 ब्रिटिश, इंग्लिश और वेल्श लोगों के समूह पर पहले भी चिकित्सीय, शैक्षिक और रिश्तों संबंधी अध्ययन होते रहे हैं। 1958 में एक ही सप्ताह में पैदा हुए इस समूह के 50 वर्ष का होने पर यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन के शोधकर्ताओं ने इन पर स्मरण क्षमता की तुलना करने के लिए अध्ययन किया।

स्मरण टेस्ट में इन्हें रोजाना 10 शब्द दिए जाते थे जिन्हें इन लोगों को पाँच मिनट बाद दोबारा याद करके लिखना होता था। पहले टेस्ट में महिलाओं ने पुरुषों से पांच प्रतिशत अधिक अंक प्राप्त करें जबकि दूसरे टेस्ट में महिलाओं ने 8 प्रतिशत अधिक अंक प्राप्त करें। तीसरी बार जब टेस्ट लिया गया तो महिलाओं ने पुरुषों से पहले ही यह टेस्ट पूरा कर लिया।

अध्ययनकर्ता जेन एलियट ने कहा कि नतीजों से यह पता चलता है कि महिलाओं की स्मरण क्षमता अधिक होने का जैविक कारण भी है। इसे महिलाओं में सेक्स हार्मोन ओस्ट्रोजन से भी जोड़ा जा सकता है।